टिप्पणियाँ

१. घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु-उपन्यास, पृष्ठ ४६.

द्वितीय अध्याय

हिन्दी लघु-उपन्यास - उद्भव और विकास

हिन्दी लघु उपन्यासों का उद्भव -

हिन्दी लघु उपन्यासों का विकास -

प्रेमचन्द पूर्व के लघु उपन्यास -

प्रेमचन्द युग के लघु उपन्यास -

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के लघु उपन्यास -

सन १९६० के बाद के लघु उपन्यास -

हिन्दी लघु-अुपन्यास - अुद्भव और विकास

"हिन्दी साहित्य में लघु-अुपन्यास समय की मांग को लेकर अुद्भूत हुआ है।"[१] हिन्दी में लघु-अुपन्यासों का अुद्भव क्यों हुआ ? यह जरा सोचने लायक सवाल है। अुपन्यासकार अपने अुपन्यास में अपने युग के सम्पूर्ण जीवन-दर्शन, अनेकों समस्याअें, अनेकों घटनाअें तथा अनेकों पात्रों को लेकर चलता है। यों कहिअे कि अुपन्यास अपने युग का सम्पूर्ण चित्र हुआ करता है, लेकिन आज के अुपन्यासों से अैसी अपेक्षा रखना, भूल ही होगी, क्योंकि आज का जीवन और आज का समाज अितना जटिल हो गया है कि अुनको सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्ति दे पाना जरा कठिन काम है। आज का युग वैज्ञानिक युग है। यांत्रिक युग है। अिस युग में आज अगर हम अुपन्यासकारों से यह चाह रखें कि वे अपने सम्पूर्ण जीवन और अपने समाज को चित्रित करें तो यह समीचीन नहीं होगा। क्योंकि आज समाज का हर व्यक्ति अपने में ही मशगुल है। आज व्यक्ति का जीवन खंडित हो चुका है। जिन्हें हम जानते हैं, वे भी खण्ड खण्ड हो चुके हैं। हर व्यक्ति दोहरी जिंदगी जी रहा हैं। अुनेकों मुखौटों को धारण कर वह अपनी ज़िन्दगी जी रहा है। यही कारण है कि आज का अुपन्यासकार अिसी खंडित व्यक्ति के खंडित चित्रों को अभिव्यक्ति देने के प्रयास में जुट गया है। अतअेव आजकल लघु-अुपन्यास अधिक मात्रा में लिखे जा रहे हैं। आज अुपन्यासकार के पास समय की भी कमी है। अिस समय की कमी में वृहद अुपन्यासों की रचना करना कठिन हो गया है। अिसलिअे आज का हर अुपन्यास कार लघु-अुपन्यास लिखने के पीछे पडा हुआ है।

आजकल तो हिन्दी लघु-अुपन्यास अधिक मात्रा में लिखे जा रहे हैं, अिसका अेक और कारण है - व्यावसायिकता। आज की बढ़ती महँगाअी और

बेकारी की हालत में सामान्य पाठक ५०-६० रु० कीमतवाले अुपन्यास खरीद नहीं सकता और दूसरी ओर प्रकाशक भी अिस बात का खयाल करता है कि अगर ४०-५० रु० कीमतवाले अुपन्यास छाप दिअे और बिक नहीं पाये तो घाटा भी हो सकता है, दीवाला भी निकल सकता है। यही कारण है कि प्रकाशक भी आजकल बृहद अुपन्यासों को छापने के झंझट में नहीं फँस रहे हैं। आज का सामान्य पाठक दो या तीन अथवा चार-पाँच रुपयेवाली कीमत के लघु-अुपन्यासों को ही खरीदना चाहता है। दूसरी बात यह है कि आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी में बड़े बड़े अुपन्यास पढ़ना सामान्य पाठक बिलकुल स्वीकार नहीं करता/अुसकी चाह यही रहती है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक मन बहलाव हो। वह ट्रेन में वक्त काटने के लिअे अथवा रात को सोने से पहले अैसे छोटे छोटे अुपन्यासों को ही पढ़ना अधिक पसन्द करता है।

सारांश में हम कह सकते हैं कि तेज रफ़्तार ज़िन्दगी, व्यक्ति का खण्डित जीवन समय की कमी, महँगाअी, व्यावसायिकता आदि बातों के कारण ही आजकल हिन्दी में अधिकतर लघु-अुपन्यासों की रचनाअें विपुल मात्रा में हो रही हैं।

हिन्दी लघु-अुपन्यासों का विकास

हिन्दी लघु-अुपन्यास के विकास का विशेष अध्ययन करने के लिअे अुसको हम निम्नांकित भागों में विभाजित कर सकते हैं -

१. प्रेमचन्द पूर्व के लघु-अुपन्यास -

२. प्रेमचन्द युग के लघु-अुपन्यास -

३. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के लघु-अुपन्यास -

४. सन १९६० के बाद के लघु-अुपन्यास -

१. प्रेमचन्द पूर्व के लघु-अुपन्यास

हिन्दी का प्रथम मौलिक अुपन्यास 'परीक्षा गुरु' माना जाता है, लेकिन यह अेक विवाद का विषय बन गया है।

१. नूतन ब्रह्मचारी - बालकृष्ण भट्ट - १८८६
२. चतुर चंचला - गोपालदास गहमरी - १८९२
३. हम्माम का मुर्दा - रामप्रसाद लाल - १९०२
४. काला चाँद / लंगडा खूनी - जयरामदास गुप्त -
५. खूनी का भेद - रामलाल वर्मा
६. त्रिवेणी वा सौभाग्या / श्रेणी - किशोरीलाल गोस्वामी - १८८८
   पुर्नजन्म वा सौतियाडाह - ,, - १९०७
७. बिगडे का सुधार - लज्जाराम शर्मा - १९०७
८. किरण शशि - रामप्रसाद त्यागी - १९०९
९. चम्पा - कृष्णलाल वर्मा - १९१६

प्रेमचन्द युग के लघु-अुपन्यास

प्रेमचन्द हिन्दी अुपन्यास-सम्राट हैं। अुनके आगमनसे हिन्दी अुपन्यास साहित्य में अेक नये युग की अवतारणा हुअी।

१. निर्मला - प्रेमचन्द - १९२३
२. चंद हसीनों के खतूत - बेचन शर्मा अुग्र - १९२३
३. प्रतिज्ञा - प्रेमचन्द
४. परख - जैनेन्द्रकुमार - १९२९

५. लज्जा - इलाचंद जोशी - १९२९
६. गोद - सियारामशरण गुप्त - १९३२
७. चित्रलेखा - भगवतीचरण वर्मा - १९३४
८. त्यागपत्र - जैनेन्द्रकुमार - १९३७
९. कल्याणी - जैनेन्द्रकुमार - १९३९
१०. नारी - सियारामशरण गुप्त - १९३९
११. अपने पिया - उषादेवी मित्रा - १९३७
१२. पार्टी कामरेड - यशपाल - १९४६

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के लघु-उपन्यास

१.	रतिनाथ की चाची	- नागार्जुन	- १९४९
	बलचनमा -	- ,,	- १९५२
	बाबा बटेसरनाथ	- ,,	- १९५४
	दुःखमोचन -	- ,,	- १९५७
	वरुण के बेटे -	- ,,	- १९५७
२.	सूरज का सातवां घोड़ा - धर्मवीर भारती -		
३.	बाहर - भीतर - डॉ. देवराज -		- १९५४
४.	बिल्लेसुर बकरिहा - निराला		- १९६१
५.	गंगामैया - भैरवप्रसाद गुप्त -		- १९५३
६.	कुल्लीभाट -	निराला	- १९५१
७.	उबाल -	रांगेय राघव	- १९५४
८.	हुजूर -	,,	- १९५६
९.	पत्थर अल-पत्थर -उपेन्द्रनाथ अश्क		- १९५१

१०. चांदनी के खंडहर - गिरधर गोपाल - १९५५
११. उसका बचपन - कृष्ण बलदेव वैद - १९५४
१२. सोया हुआ जल - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना -
१३. डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती -
१४. सूरज किरण की छाँव - राजेन्द्र अवस्थी - १९५९
१५. वह फिर नहीं आई - भगवतीचरण वर्मा -

सन १९६० के बाद के लघु-उपन्यास

१. अेक सड़क सत्तावन गलियाँ - कमलेश्वर - १९६१
२. लौटे हुअे मुसाफ़िर - कमलेश्वर - १९६३
३. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - १९६४
४. समुद्र में खोया आदमी - कमलेश्वर -
५. डाकबंगला - कमलेश्वर -
६. आगामी अतीत - कमलेश्वर -
७. अपने अपने अज़नबी - अज्ञेय - १९६१
८. पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा -
रुकोगी नहीं राधिका - ,,
९. बारह घण्टे - यशपाल - १९६३
१०. अनदेखे अनजाने पुल - राजेन्द्र यादव - १९०३
११. कुलटा - राजेन्द्र यादव - १९५८
१२. जुलूस - फणीश्वरनाथ रेणु - १९६५
कितने चौराहे - ,, - १९६६
१३. पराअी डाल का पंछी - अमरकांत - १९६२

सूखे पत्ते - अमरकांत -

१३• ये जाने अनजाने - छेदीलाल गुप्त - १९६२

१४• अठारह सूरज के पौधे - रमेश बक्शी - १९६५

अेक घिसा हुआ चेहरा - ,, - १९६७

१५• नदी बहती थी - राजकमल चौधरी - १९६१

मछली मरी हुअी- ,, - १९६६

१६• टूटती अिकाअियां - शरद देवड़ा - १९६४

१७• अतृप्ता - कान्त सिन्हा - - १९६२

१८ वे दिन - निर्मल वर्मा - - १९६४

१९• कस्तुरी - शानी

२०• अेक पांत के नोटस् - महेन्द्र भल्ला -

२१• अज्ञातवास - श्रीलाल शुक्ल

२२• आँखों की देहलीज़ - मेहरुन्निस्सा परवेज़

२३• झरोखे - कीरण साहनी

२४• आंगन में अेक वृक्ष - दुष्यंत कुमार

२५• नदी औरस सीढ़ियाँ - शानी

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR